



दैनिक संपादकीय विश्लेषण

विषय

उभरता पूर्वोत्तर: पूर्वोत्तर भारत के लिए एक दृष्टिकोण

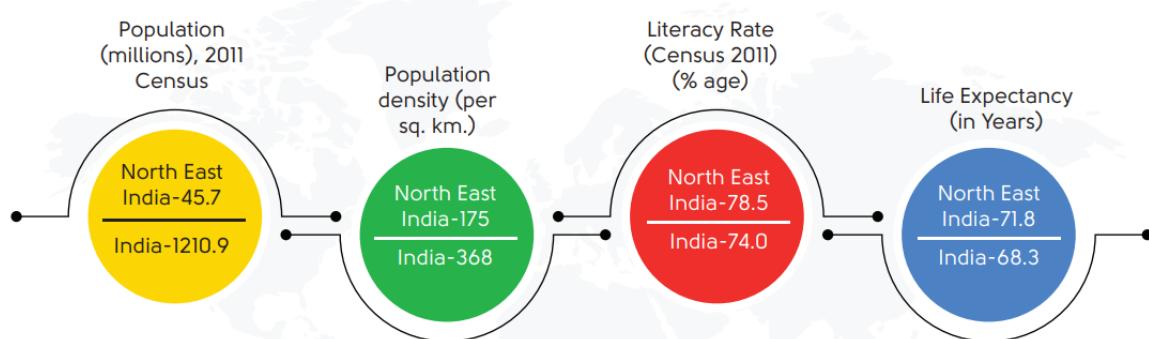
उभरता पूर्वोत्तर: पूर्वोत्तर भारत के लिए एक दृष्टिकोण

सन्दर्भ

- पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्रालय (डोनर) भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र की निवेश और व्यापार क्षमता को प्रदर्शित करने के लिए नई दिल्ली में 'राइजिंग नॉर्थईस्ट: द इन्वेस्टर समिट' का आयोजन कर रहा है।

राइजिंग नॉर्थईस्ट इन्वेस्टर समिट 2025 की मुख्य विशेषताएँ

- उद्घाटनकर्त्ता:** भारत के प्रधानमंत्री
 - उन्होंने विकास के लिए मार्गदरशक सिद्धांत के रूप में ईस्ट विजन: सशक्त बनाना, कार्य करना, मजबूत बनाना और बदलाव लाना को रेखांकित किया।
- समिट एजेंडा:** इसमें मंत्रिस्तरीय सत्र, बिजनेस-टू-बिजनेस (B2B) और बिजनेस-टू-बिजनेस (B2G) बैठकें और एक प्रदर्शनी क्षेत्र शामिल हैं।
- फोकस सेक्टर:** कृषि, खाद्य प्रसंस्करण और संबद्ध क्षेत्र; कपड़ा, हथकरघा और हस्तशिल्प; मनोरंजन और खेल; शिक्षा और कौशल विकास; स्वास्थ्य सेवा; आईटी और आईटीईएस; पर्यटन और आतिथ्य; बुनियादी ढाँचा और रसद; और ऊर्जा।
- यह पूर्वोत्तर के विकास पथ को गति देने के लिए नीतिगत चर्चाओं, व्यावसायिक सहयोग और निवेश साझेदारी के लिए एक मंच के रूप में कार्य करता है।
- इसमें आठ राज्य शामिल हैं:** अरुणाचल प्रदेश, असम, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, सिक्किम और त्रिपुरा।
- भौगोलिक क्षेत्र:** भारत के कुल भूभाग का 7.97% हिस्सा कवर करता है। जनसंख्या: भारत की कुल जनसंख्या का लगभग 3.78%।
- पहाड़ी क्षेत्रों की जनसंख्या:** 54% से अधिक अंतर्राष्ट्रीय सीमाएँ: बांग्लादेश (1,880 कि.मी.), म्यांमार (1,643 कि.मी.), चीन (1,346 कि.मी.), भूटान (516 कि.मी.) और नेपाल (99 कि.मी.) के साथ 5,484 कि.मी. की सीमा साझा करता है।
- इसे आसियान और पूर्वी एशिया के प्रवेश द्वार के रूप में स्थापित किया गया है, जो भारत की एक ईस्ट नीति को मजबूत करता है।



पूर्वोत्तर के विकास में बाधा डालने वाली चिंताएँ और चुनौतियाँ

भौगोलिक और संपर्क संबंधी मुद्दे:

- इस क्षेत्र के ऊबड़-खाबड़ इलाके और भारी मानसून बुनियादी ढाँचे के विकास को मुश्किल बनाते हैं।
- सीमित रेल और सड़क नेटवर्क व्यापार और गतिशीलता को प्रतिबंधित करते हैं।

राजनीतिक और जातीय संघर्ष:

- उग्रवाद और जातीय तनाव ने ऐतिहासिक रूप से स्थिरता को बाधित किया है।
- स्वायत्तता और विशेष दर्जे की मांग शासन की चुनौतियाँ पैदा करती हैं।
- 1980 के दशक तक नागा और मिजो अलगाववादी आंदोलनों ने गति पकड़ी। स्वायत्तता और संप्रभुता की मांग करते हुए असम में उल्फा और एनडीएफबी का उदय हुआ।
- बांग्लादेश से घुसपैठ के कारण बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन हुए, जिसकी परिणति 1985 के असम समझौते में हुई।

आर्थिक पिछड़ापन:

- यह क्षेत्र भारत के सकल घेरलू उत्पाद में केवल 2.8% का योगदान देता है, जिसमें असम सबसे बड़ा योगदानकर्ता है।
- सीमित औद्योगिकरण और कृषि पर निर्भरता आर्थिक विकास को धीमा करती है।

पर्यावरणीय चुनौतियाँ:

- वनों की कटाई, बाढ़ और भूस्खलन कृषि और बुनियादी ढाँचे को प्रभावित करते हैं।
- जलवायु परिवर्तन जैव विविधता और पारंपरिक आजीविका को खतरे में डालता है।

नीति और शासन में खामियाँ:

- मेघालय में इनर लाइन परमिट (ILP) जैसी प्रमुख नीतियों के क्रियान्वयन में देरी।
- केंद्र और राज्य सरकारों के बीच बेहतर समन्वय की आवश्यकता।

पूर्वोत्तर भारत में नीति परिवर्तन

उग्रवाद से एकीकरण तक:

- स्वतंत्रता के बाद, पूर्वोत्तर उग्रवाद से ग्रस्त रहा।
- सरकार ने पूर्वोत्तर को मुख्य रूप से सुरक्षा के नज़रिए से देखा, विकास पर बहुत कम ध्यान दिया।
- इस क्षेत्र में कई लोग शारीरिक और भावनात्मक रूप से अलग-थलग महसूस करते थे।

रणनीतिक बदलाव: लुक ईस्ट से एक्ट ईस्ट

- लुक ईस्ट नीति की शुरुआत नरसिंहा राव सरकार ने दक्षिण पूर्व एशिया के साथ संबंधों को बढ़ावा देने के लिए की थी।
- अटल बिहारी वाजपेयी ने 2001 में DoNER मंत्रालय की स्थापना करके इस दिशा को औपचारिक रूप दिया।
- 2014 में, मोदी सरकार ने एक्ट ईस्ट नीति को अपनाया, जिसने भारत की क्षेत्रीय रणनीति में एक निर्णायक मोड़ को चिह्नित किया।

बुनियादी ढाँचे और एकीकरण का युग

जमीनी स्तर पर परिवर्तन:

- पूर्वोत्तर भारत की आर्थिक और भू-राजनीतिक दृष्टि का केंद्र बन गया।
- केंद्रीय मंत्रियों ने इस क्षेत्र में निरंतर उपस्थिति बनाए रखी, जिससे लोगों और सरकार के बीच भावनात्मक अंतर कम हुआ।

बुनियादी ढाँचे को बढ़ावा:

- NESIDS और PM-DevINE जैसी सरकारी पहलों का उद्देश्य सड़कों, जल आपूर्ति और बिजली के बुनियादी ढाँचे में सुधार करना है।
- सड़कों, विद्युत् और जल आपूर्ति के लिए 1 बिलियन डॉलर के बजट के साथ 2018 में उत्तर पूर्व विशेष अवसंरचना विकास योजना (NESIDS) प्रारंभ की गई।
- 4,950 किलोमीटर राष्ट्रीय राजमार्गों का निर्माण किया गया।
- सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय के माध्यम से 5 बिलियन डॉलर से अधिक का निवेश किया गया, जिसने अपने बजट का 10% क्षेत्र को आवंटित किया।

मुख्य बुनियादी ढाँचा परियोजनाएँ:

- भारत-म्यांमार-थाईलैंड त्रिपक्षीय राजमार्ग
- कलादान मल्टी-मॉडल ट्रांजिट ट्रांसपोर्ट परियोजना

स्टिलवेल रोड का पुनरुद्धार

- इन पहलों का उद्देश्य आसियान के साथ भूमि-आधारित व्यापार को बढ़ावा देना है। इसके अतिरिक्त, आगामी सित्तवे पोर्ट (म्यांमार) और चटगाँव पोर्ट (बांग्लादेश) के माध्यम से समुद्री संपर्क को मजबूत किया जाएगा।

निष्कर्ष

- ‘उभरता पूर्वोत्तर’ शिखर सम्मेलन एक बार उपेक्षित क्षेत्र को एक गतिशील निवेश और रणनीतिक केंद्र में बदलने का प्रतीक है।
- बढ़ी हुई कनेक्टिविटी, प्रतिबद्ध बुनियादी ढाँचे के विकास और निरंतर राजनीतिक जुड़ाव के साथ, पूर्वोत्तर अब दक्षिण पूर्व एशिया के लिए भारत के प्रवेश द्वार के रूप में काम करने के लिए तैयार है।

दैनिक मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

प्रश्न: पूर्वोत्तर के लिए दृष्टिकोण भारत के व्यापक आर्थिक और रणनीतिक लक्ष्यों के साथ किस प्रकार संरेखित है, और कौन सी चुनौतियाँ इसके पूर्ण साकार होने में बाधा बन सकती हैं?

Source: IE

